Basis of Sociology of Religion- Weber

DSE 01

SOCIOLOGY OF RELIGION

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

वेबर ने अपने इस अध्ययन में धार्मिक कारक को एक परिवर्तनीय तत्व माना है और उसका आर्थिक तथा अन्य सामाजिक घटनाओं पर जो कार्य-कारण का प्रभाव पड़ता है उसका विश्लेषण तथा निरूपण करने का प्रयत्न किया है। **वेबर** का विश्वास है कि केवल कुछ अर्थों में समान और अन्यों में भिन्न उदाहरणों का अध्ययन करके ही किसी कारक के कार्य-कारण के प्रभाव का निर्णय सम्भव है। इसी कारण आपने किसी एक धर्म को नहीं, बल्कि कुछ अर्थों में महान विश्व-धर्मों को अपने अध्ययन में स्थान दिया। ऐसा करने का एक कारण यह भी है कि **मैक्स वेबर** ने यह अनुभव किया कि **मार्क्स** की भाँति केवल ऐतिहासिक प्रक्रिया को और अधिक स्पष्ट कर देने से ही उसकी समस्या का समाधान नहीं हो सकता; उसके लिए कोई अन्य ठोस आधार ढूँढ़ना पड़ेगा और वह आधार धार्मिक आधार है।

नि:संदेह कानूनी, आर्थिक और सामाजिक इतिहास के अध्ययन में **मैक्स वेबर** की देन महत्त्वपूर्ण है, परन्तु आपकी सबसे महत्त्वपूर्ण और सर्वाधिक विदित देन 'धर्म का समाजशास्त्र' है। **वेबर** ने विश्व के प्रमुख धर्मों का व्यापक अध्ययन किया और इस अध्ययन के आधार पर धर्म की समाजशास्त्रीय व्याख्या करने का प्रयत्न किया। उनका यह विशद् अध्ययन तीन बड़े-बड़े ग्रंथों में है, आर्थिक व सामाजिक घटनाओं में क्या सम्बन्ध है। **पारसन्स** ने इस सम्बन्ध में लिखा है, "नि:संदेह वेबर समस्त सम्बन्धित क्षेत्रों में एक असाधारण रूप से योग्य सामाजिक और आर्थिक इतिहासकार थे और इस कारण आप सरलता से अपने बाकी शैक्षणिक जीवन को एक महान ऐतिहासिक अध्ययन की पूर्ति में लगा सकते थे, परन्तु ऐसा करने के बजाय आप सर्वथा भिन्न अध्ययन-क्षेत्र की ओर मुड़े और समस्त महान विश्व-धर्मों के धार्मिक आचारों तथा उनसे सम्बन्धित सामाजिक तथा आर्थिक संगठन के बीच पाए जाने वाले विद्यमान सम्बन्धों के विशुद्ध तुलनात्मक अध्ययन-कार्य में लग गए।" इस तुलनात्मक अध्ययन का सर्वप्रमुख उद्देश्य यह प्रमाणित करना था कि सामाजिक संरचना में समग्र रूप में कौन-से तत्व समाज के लिए विशेष रूप से विशिष्ट और केन्द्रीय महत्त्व के हैं।

ऐतिहासिक उद्गमों की समस्या को प्रस्तुत करने में **वेबर** नि:संदेह मार्क्सवादी दृष्टिकोण से प्रभावित थे। फिर भी आपने अनुभव किया कि इस व्याख्या की प्रणाली को विकास की प्रक्रिया पर लागू नहीं किया जा सकता है। **वेबर** का विश्वास है कि ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया केवल आर्थिक कारक या जीवित रहने के साधन पर ही निर्भर नहीं है। अधिक अच्छा यह हो कि उस आधार को आचार और धार्मिक विश्वासों से सम्बन्धित प्रत्यक्ष और व्यावहारिक मूल्य के आधार को आचार और धार्मिक विश्वासों से सम्बन्धित प्रत्यक्ष और व्यावहारिक मूल्य के अनुसार ढूँढ़ा जाए। **मार्क्स** की भाँति **वेबर** ने यह तो स्वीकार किया कि सामाजिक संरचना में आर्थिक कारक भी महत्त्वपूर्ण है, परन्तु **वेबर** ने यह मानने से इनकार किया कि आर्थिक कारक ही महत्त्वपूर्ण है।

वेबर ने यह मानने से इनकार किया कि आर्थिक कारक ही एकमात्र कारक हैं और कला साहित्य, सामाजिक व राजनीतिक संरचना, विज्ञान, दर्शन और धर्म सब-कुछ आर्थिक कारक के द्वारा ही निश्चित होते हैं। आपके मतानुसार धार्मिक आचार और आर्थिक व्यवस्था एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, और कभी-कभी नैतिक या आचारशास्त्रीय सिद्धांत या धारणाएँ आर्थिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

धर्म के समाजशास्त्र के प्रमुख आधार

Main Basis of Sociology of Religion

वेबर अपने अध्ययन में एक उचित वैज्ञानिक मान बनाए रखने के सम्बन्ध में सदैव सचेत रहे, और इस कारण आपने समस्त एक कारक वाले सिद्धांतों को बड़ी सावधानी से अपने अध्ययन से दूर रखा। **वेबर** के धर्म के समाजशास्त्र के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं–

1. धार्मिक तथा आर्थिक घटनाएँ एक-दूसरे से सम्बन्धित और एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इनमें से किसी को भी दूसरे का स्थान लेना उचित न होगा। वास्तव में, ये दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं।

2. कोई भी एकतरफा दृष्टिकोण, पद्धति या व्याख्या अवैज्ञानिक और इस कारण, गलत है। किसी भी प्रकार की एकतरफा विवेचना से हमें सदैव बचना चाहिए। न तो केवल इतिहास की आर्थिक व्याख्या और न ही समस्त सामाजिक घटनाओं की धार्मिक आधार पर की गई कोई विवेचना सत्य और यथार्थ है। ये दोनों कारक एक-दूसरे से सम्बन्धित व एक-दूसरे पर आधारित होते हैं। साथ ही, इन दो कारकों के अतिरिक्त अन्य अनेक दूसरे कारक भी हैं जो मानव-समाज के अस्तित्व तथा निरन्तरता के लिए उत्तरदायी हैं।

3. परन्तु अध्ययन-पद्धति के आधार के रूप में इनमें से किसी एक कारण को एक परिवर्तनीय तत्व माना जा सकता है। **वेबर** धार्मिक कारक को इस प्रकार का एक परिवर्तनीय तत्व मानकर उसका आर्थिक तथा अन्य सामाजिक घटनाओं पर प्रभाव मालूम करने का प्रयत्न करते हैं।

4. **वेबर** ने अपने अध्ययन में सभी धर्मों से सम्बन्धित समस्त तत्वों का स्पष्टीकरण न करके केवल 'आदर्श-प्रारूपों' को निश्चित रूप से पृथक् करते हुए उनके कार्य-कारण का प्रभाव तथा महत्त्व की व्याख्या की है। उसी प्रकार आर्थिक कारक में भी आपने 'आदर्श प्रारूपों' को तुलनात्मक अध्ययन के लिए चुना है।

धार्मिक कारक को एक परिवर्तनीय तत्व मानकर **वेबर** 'धर्म के आर्थिक आचारों' को अपने अध्ययन का आधार मान लेते हैं और इसी आधार पर धर्म के आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को ढूँढ़ने का प्रयत्न करते हैं। 'धर्म के आर्थिक आचारों' के अन्तर्गत **वेबर** धर्म से सम्बन्धित विभिन्न आध्यात्मिक सिद्धांतों और विचारों को नहीं, वरन् आचरण के उन समस्त व्यावहारिक तरीकों को सम्मिलित करते हैं जोकि एक धर्म अपने सदस्यों के लिए निश्चित करता है। आपके अनुसार, धार्मिक आचारों और धार्मिक विश्वासों में एक सम्बन्ध है। साथ ही, आचरण के प्रभावपूर्ण स्वरूपों के निर्माण में धार्मिक कारक के अतिरिक्त अन्य अनेक कारकों का योग होता है, फिर भी उनमें धर्म एक महत्त्वपूर्ण कारक है।